

एकों ओंकार श्रीगुरु प्रसाद

ॐ नमः सिद्धि “श्रीगणपति सरस्वति पार्वती शंकर

गरीबि श्रीखण्डि के शत्रू क्षयकर ॥

मैगसि सदां खुशि अरथायः ।

श्लोक

सा मति देहु दयाल, मिठी मैथिलि अमड़ि आराधाँ ।

गरीबि श्रीखण्डि माँगे दान इहु, पनही पद राधाँ ॥१॥

चख चकोर को दिवस निशि, दीजे प्रेमानन्द ।

चाह करूँ भूनन्द पद, द्वै द्वै चन्मानन्द ॥२॥

मैगसि की रक्षा करो, श्रीमद्भगवत गीतामय ।

सदां हर्ष सत्संग में, मैगसि सुखी वसाय ॥३॥

मैगसि कर रक्षा करो, श्रीयुति भक्तनि माल ।

सदां सुखी सत्संग में, मैगसि हर्ष विशाल ॥४॥

श्री मैथिलिचन्द्र जी रुचि दे, गंगा विष्णुपदी ।

मैगसि को सदां खुशि रखे, तेरी अष्टपदी ॥५॥

श्रीशुक सामति देहु मोहि, श्रीमैथिलि अमड़ि आराधाँ ।

गरीबि श्रीखण्डि मांगे दानु इहु, पनहीं पद राधौं ॥६॥

मैगसि की रक्षा करो, केशव कमलाकन्त ।

सदां हर्ष सत्संग में, मैगसि सुखी वसन्त ॥७॥

मैगसि की रक्षा करो, श्रीकेशव त्रिभुवन राय ।

दिवस रात्रि सत्संग में, मैगसि सुखी वसाय ॥८॥

मैगसि की रक्षा करो, श्री कमलेश्वर राय ।

सदां सुखी ब्रज में वसूं, श्रीराधादेवि सहाय ॥९॥

मातालक्ष्मी स्वामिनी, पिता नारायणदेव है ।

गरीबिश्रीखण्डि प्रियछतार्थसदैवपुत्रियों को वज्रहै ॥१०॥

गौरश्याम राधारमण, महादानि ब्रजराय ।

सदां सुखद सत्संग में, मैगसि सुखी वसाय ॥११॥

मैगसि की रक्षा करो, श्रीयुत यशुमति माय ।

सदां बसूं ब्रज देश में, सिग भूजा पद पाय ॥१२॥

राणी श्रीनन्दगांव जी, जसुमति राधादेवि ।

शल सद्रिड़ा कंदी सुखनि भरिया सिग अची करि सेव ॥१३॥

मैगसि की रक्षा करो, श्री ज्ञानेश्वर राय ।

अमृत नाम सत्संग में, मैगसि सुखी वसाय ॥१४॥

मैगसि की रक्षा करो, सतिगुर केशव राय ।

श्रीयशुदा राधा कृपा, गरीबि श्रीखण्डि हर्षाय ॥१५॥

करहूं कृपा करुणानिधे, श्रीराधे बृजराणी ।

मैगसि को सशक्ति दे, क्यासु जुगल वाणी ।१६॥

गीत

सतिगुर सच्चा पातिशाह रखु लज्जा मेरी ।

लिया मैं तेरा आसरा, ठाहि हौंमें ढेरी ।

मै तो तेरी हो चुकी, ज्यूं मरजी तेरी ।

मुशिकुल कुशा साहिब सच्चा, दे सिकजी सह ढेरी ।

नंग पालींदड़ न दिसां, औसरओखेरी ।

मैथिलि चन्द्र दूलह मिले, गरीबि श्रीखण्डि चेरी ।

पूर्ण कजि पवित्र धणी, इहा आश घनेरी ।